मस्जीदो मे दुन्यावी बाते बुलन्द आवाज़ से होने लगेगी

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

ये बुराई भी आम होती जा रही है लोग नमाजो से फारिग हो कर मस्जीद मे ही बेठ जाते है और बाते करना शुरू कर देते है अगर कोई दीनी ज़रूरी बात है तो ठीक है अपनी दुन्यावी बातो के लिये मस्जीदो मे न बेठे बाहर चले जाये अगर कोई मामला पेश आया हो उस वकत भी मस्जीद ही मे शौर बकोर होने लगता है ये बडी खतरनाक चीझ है आदमी की नैकीयो को बरबाद करने वाली चीझ है, ऐसी हकरतो से हमे बचना चाहिये कयू के मस्जीद अल्लाह का घर है और अल्लाह के घर का ऍहतेराम हर मुसलमान पर ज़रूरी है.

आज कल लोग मोबाईल फोन चालु रख कर आते है और वो नमाज के दरमीयान मे बजने लगता है आज से कुछ ज़माना पेहले अगर कोई आदमी ये केहता के मस्जीद मे म्यूजिक

बजेगा तो ये बात लोगो को समझ मे भी न आती कोई तसव्वूर भी नही कर सकता था के ऐसा भी हो सकता है लेकिन आज हो रहा है लोग मोबाईल फोन चालु रख कर आते है और नमाज के दरमीयान बजने लगता है और पूरी मस्जीद के नमाजीयो की नमाज खराब हो जाती है उनके लिये अल्लाह की तरफ से कितना सख्त मामला हो सकता है उसका अन्दाज़ा नही लगाया जा सकता.

एक साहब ने एक अपाहीज आदमी को देखा जो चलने से माज़ूर था उन्होने पूछा भाई किया बात है? उसने कहा एक मरतबा रसूलुल्लाहﷺ नमाज अदा फरमा रहे थे मे सामने से गुज़र गया उसपर रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया हमारी नमाज को काट दिया यानी नमाज की तवज्जुह खतम कर दी अल्लाह उसके नकशे को काटे उस वकत से मे चलने से माज़ूर हो गया. (मुस्नदे अहमद)

रसूलुल्लाहﷺ ने मस्जीद को अल्लाह का घर करार दिया और जैसा के हदीस मे आता है रसूलुल्लाहﷺ ने ये भी

फरमाया के मस्जीदे तो आखिरत के बाज़ार है जैसे दुन्या के बाज़ार है के लोग वहा जाकर दुन्या हासिल करते है ठीक इसी तरह आखिरत हासिल करनी हो तो उसको मस्जीद के अन्दर आकर के मस्जीद वाले आमाल करने पड़ेंगे तो वो आखिरत वाला नफा कमायेगा आखिरत की दौलत हासिल करेगा जैसे लोग दुन्या की बाज़ारो से दुन्या हासिल करते है.

फिर आगे फरमाते है के जो शख्स मस्जीद मे दाखिल होता है वो अल्लाह का मेहमान बन जाता है अल्लाह की तरफ से उसकी मेज़बानी मगफिरत की शकल मे की जाती है जैसे कोई शख्स जब किसी के यहा मेहमान होता है तो मेज़बान साहब खाना की मेज़बानी करता है खाना खिलाता है तो यहा अल्लाह उसकी मेज़बानी उसके गुनाह को माफ करके करते है और जैसे जब किसी के यहा जब कोई मेहमान आता है तो आम खाने के साथ कोई खास चीझ भी मेहमान के इकराम मे पकाई जाती है खुसूसी आइटम तो उसके लिये भी अल्लाह की तरफ से खास ऍहतेमाम किया जाता है और

उसका ऍजाज़ किया जाता है ये गोया उसके लिये एक तोहफा है गोया यहा आकर आदमी अल्लाह का मेहमान बनता है और भला कोई शख्स किसी के यहा मेहमान बन कर आये तो किया वो मेज़बान के लिये किसी किसम की तकलीफ पोहचाने का जरिया बन सकता है.

तो मतलब ये है के मस्जीद आखिरत की नेकीया कमाने का एक जरिया है इसलीये कहा गया के मस्जीदे आखिरत के बाज़ारो मेसे एक बाज़ार है.

मस्जीद का एक अदब तो ये है के जब कोई आदमी मस्जीद मे आवे तो अल्लाह के ज़िक्र मे मशगूल होना चाहिये रसूलुल्लाहﷺ फरमाते है के जब तुम लोग जन्नत के बागीचो और जन्नत की कियारी पर से गुज़रो तो चर लिया करो यूही न गुज़र जावो जैसे जानवर की आदत होती है के जब घास चारे वाली जगा से गुज़रता है तो दो एक मरतबा अपना मुंह मार ही लेता है यूही नही जाता इसी तरह जब तुम जन्नत की कियारी के पास से गुज़रो तो यूही न गुज़र जावो बल्के कुछ चर लिया

करो तो सहाबा ने पूछा के ऍ अल्लाह के रसूल ये जन्नत के बागीचे और कियारीया किया है? तो रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया के मस्जीदे जन्नत की कियारीया है.

फिर सहाबा ने पूछा ऍ अल्लाह के रसूल चरना किया है? तो रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया 'सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि वलाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर' यानी मुख्तलिफ अज़कार के जरिया मस्जीद मे बेठ कर अल्लाह को याद करना ये गोया उसमे चरना है उससे फायदा उठाना है ये भी मस्जीद के आदाब मेसे है आदमी जब मस्जीद मे जाये तो वहा नमाज मे मश्गूल हो कुरान की तिलावत मे मश्गूल हो अल्लाह के ज़िक्र मे मश्गूल हो ये मस्जीद के आदाब मेसे है मस्जीद के हुकूक की अदायगी मेसे है उसका ऍहतेमाम होना चाहिये, मस्जीद की चीझे बाहर न ले जाये और मस्जीद की चीझो का गलत इस्तेमाल न करे इन सब चीझो पर अल्लाह हमे अमल की तौफीक अता फरमाये, और मस्जीदो की सही कदरदानी नसीब फरमाये.

आदमी अपने आपको दुन्यावी बातो मे मशगूल न करे रसूलुल्लाह ﷺ ने मस्जीद मे दुन्यावी बाते करने से मना फरमाया है रसूलुल्लाह ﷺ फरमाते है के एक वकत आयेगा के मस्जीद के अन्दर लोग बेठ करके दुन्या की बाते करेंगे ऐसे लोगो के साथ तुम मत बेठो अल्लाह को ऐसे लोगो की कोई ज़रूरत नही है गोया ये मस्जीद के अन्दर दुन्या की बाते करना रसूलुल्लाह ﷺ ने उससे मना फरमाया है.

अल्लामा इबनुल इल्हाम (रह) ने एक रिवायत नकल की है के मस्जीद के अन्दर बाते करना ये नैकीयो को इस तरह खाता है जैसे आग लकडीयो को खाती है और उन्होने लिखा है के जाइज़ और मबाह बाते भी बिला ज़रूरत मस्जीद मे करेगा तो ये मकरूह है और गुनाह का काम है अपने आपको इस तरह मस्जीद मे बातो मे मशगूल करने से बचाना चाहिये. अल्लाह हमारी हिफाज़त फरमाये, और ऐसी हरकतो से बचाये.